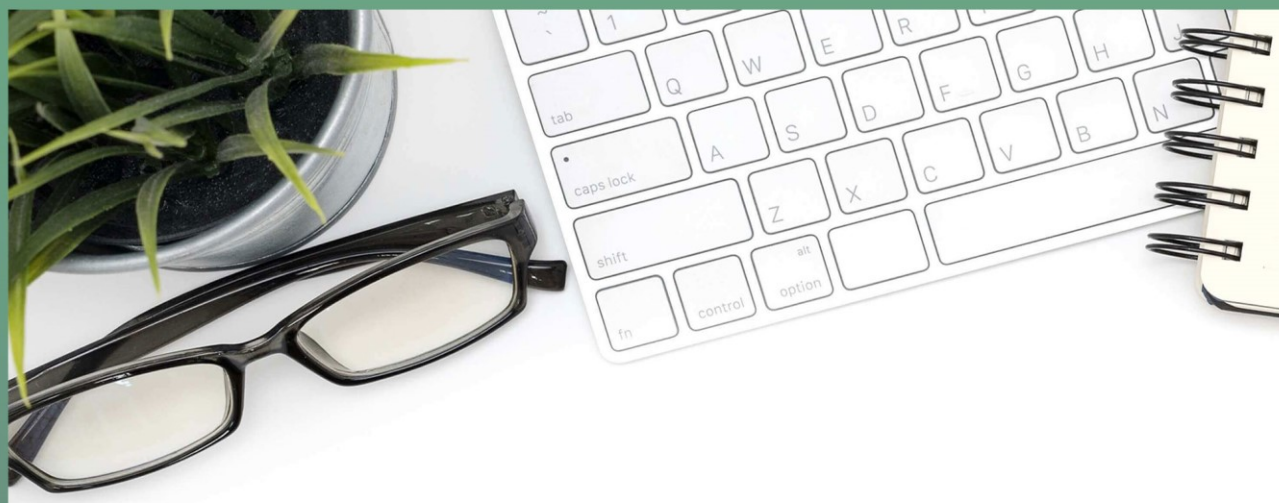

हिंदी शिक्षण

के 20 महत्वपूर्ण प्रश्नों की पी.डी.एफ डाउनलोड करें!

Powered by :

gradeup

"भाषा विकास का शिक्षा-शास्त्र"

1. आप सस्वर पठन में अनिवार्यतः किस साहित्यिक विद्या का समर्थन करेंगे?
   A. एकांकी का B. यात्रावृतान्त का
   C. जीवनी का D. आत्मकथा का
2. व्याकरण की शिक्षा स्वतन्त्र रूप से न देकर साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वानों की रचनाएँ पढ़ाई जाएँ। यह किस विधि के अंतर्गत आता है?
   A. व्याकरण शिक्षण प्रक्रिया
   B. खेल विधि
   C. प्रयोग विधि
   D. समवाय विधि
3. मैंने चाट खाई और फिर मैंने हँसी शर्मिला का यह भाषा प्रयोग मुख्यतः किस ओर संकेत करता है?
   A. व्याकरणिक नियमों की जानकारी न होना।
   B. नियमों का अति सामान्यीकरण।
   C. भाषा प्रयोग में असावधानी।
   D. भाषा की समझ न होना।
4. स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को विकसित करना -
   A. भाषा शिक्षण का एकमात्र उद्धेश्य है
   B. भाषा शिक्षण का उद्धेश्य नहीं है
   C. भाषा शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण उद्धेश्य है
   D. भाषा शिक्षण में किसी प्रकार की दिशा नहीं होता
5. भाषा-कक्षा में विभिन्न दृश्य-श्रव्य साधनों के उपयोग का उद्धेश्य नहीं है-
   A. आधुनिक तकनीक को कक्षा में लाना।
   B. सभी प्रकार के बच्चों की आवश्यकताओं का ध्यान रखना।
   C. सीखने-सिखाने की प्रतिक्रया को रूचिकर बनाना।
   D. विद्यालय-प्रमुख के निर्देशों का पालन करना।
6. भाषा-शिक्षा में कौन-सा बिन्दु सबसे कम महत्त्वपूर्ण है?
   A. भाषिक परिवेश B. पाठ्य सामग्री
   C. परीक्षाएँ D. भाषायी अभ्यास
7. सतत् और व्यापक मूल्यांकन की शुरूआत ने मूल्यांकन व्यवस्था को-
   A. बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व को ज्यादा प्रदर्शित करने वाला बनाया है।
   B. बहुत अधिक विवरण को शामिल करते हुए जटिल बनाया है।
   C. अस्पष्ट बनाया है क्योंकि विद्यार्थी के निश्चित रैंक को जाना नहीं जा सकता।
   D. केवल शैक्षणिक क्षेत्रों में निष्पादन का विश्लेषण करने के लिए ज्यादा व्यापक बनाया है।
8. प्रगति-पत्र (रिपोर्ट कार्ड) तैयार करने से शिक्षक को अपने प्रत्येक विद्यार्थी के बारे में यह सोचने का मौका मिलता है। कि वह
   A. उसने कौन-सी गलतियाँ की हैं एवं उसके अभिभावकों को इस संबंध में कैसे शिकायत की जाए?
   B. उसने अपने साथियों से कितना कम सीखा है और क्यों?
   C. उसने सत्र के दौरान क्या सीखा और किस क्षेत्र में उसको ज्यादा मेहनत करने की जरूरत है?
   D. उसने सत्र के दौरान जो सीखा है वह अन्य छात्रों से कितना कम है?
9. एक समावेशी कक्षा में भाषा-शिक्षण की समस्या है?
   A. उपयुक्त भाषा-परिवेश का निर्माण न हो पाना।
   B. उपयुक्त पाठ्य-सामग्री का अभाव।
   C. विद्यार्थियों की योग्यताओं में भिन्नता होना।
   D. विद्यार्थियों में असमान रूचि का होना।
10. कलिका हिन्दी भाषा में बोलते समय कई बार-अटकती है। आप क्या करेंगे?

A. उसे प्रवाहपूर्ण अभिव्यक्ति के नमूने सुनाएँगे और कहेंगे कि उसे भी हू-ब-हू ऐसे ही बोलना है।

B. कक्षा के बाकी बच्चों से कहेंगे कि कलिका के समझ प्रवाहपूर्ण अभिव्यक्ति के नमूने प्रस्तुत करें।

C. कक्षा में केवल कलिका को ही बार-बार बोलने के लिए कहेंगे।

D. धैर्य रखते हुए उसे सहज अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

11. हिन्दी भाषा शिक्षण में उपचारात्मक शिक्षण की विधि निम्न में से कौन-सी नहीं है?

A. अतिरिक्त कक्षाएँ B. व्यायाम

C. गोष्ठियाँ D. विशिष्ट अभ्यास

12. उपचारात्मक शिक्षण की सफलता मुख्यतः निर्भर करती है-

A. बच्चों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर

B. बच्चों की भाषागत त्रुटियों की सूची बनाने पर

C. समस्याओं की पहचान पर

D. समस्याओं के करणों की सही पहचान पर

13. भाषा का वह शैक्षिक उद्धेश्य जिसे शिक्षक कक्षा में ही प्राप्त कर लेता है, कहलाता है?

A. व्यवहारगत् उद्धेश्य।

B. सामान्य उद्धेश्य।

C. विशिष्ट उद्धेश्य।

D. प्राप्त उद्धेश्य।

14. पाठ्यक्रम निर्माण का सिद्धान्त निम्न में से कौन-सा है?

A. विभिन्न विषयों से सह-सम्बन्ध

B. अग्रदर्शी

C. अवकाश का सदुपयोग

D. उपरोक्त सभी

15. उपचारात्मक शिक्षण आवश्यक है

A. मन्द-बुद्धि के लिए

B. पिछड़े बच्चों के लिए

C. प्रतिभाशाली बच्चों के लिए

D. उपरोक्त सभी के लिए

16. ज्ञान, अनुभवों, भावनाओं, विचारों, प्रवृत्तियों तथा मूल्यों के संचय का साधन है।

A. विषय प्रवेश B. उपसंहार

C. पाठ्य-पुस्तक D. उपर्युक्त सभी

17. मौखिक अभिव्यक्ति में निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता होनी चाहिए?

A. स्वाभाविकता B. स्पष्टता

C. बोधगम्यता D. ये सभी

18. अर्थ की गहनता को समझने में कौन-सी पद्धति सर्वाधिक रूप में सहायक है?

A. द्रुत पठन B. धीमा पठन

C. सल्वट पठन D. मौन पठन

19. अनुदेशन की अवस्थाओं का सही क्रम है-

A. पूर्व व्यवहार- पारस्परिक क्रिया- उत्तर व्यावहारिक अनुदेशन।

B. पारस्परिक क्रिया-पूर्व व्यवहार- उत्तर व्यावहारिक अनुदेशन।

C. उत्तर व्यावहारिक अनुदेशन- पूर्व व्यवहार- पारस्परिक क्रिया।

D. पूर्व व्यवहार- उत्तर व्यावहारिक अनुदेशन- पारस्परिक क्रिया।

20. भाषा-शिक्षण में परम्परागत प्रकाशित सामग्री के रुप में बहुत अधिक सहायक किसे समझा जाना चाहिए?

A. पाठ्य-पुस्तक B. श्यामपट्ट

C. चित्र D. रेखाचित्र

ANSWERS

1. Ans. A.

स्वर सहित पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने को सस्वर पठन कहा जाता है। यह पठन की प्रारम्भिक अवस्थता है। वर्णमाला के वर्णों की पहचान, शुद्ध उच्चारण के साथ उचित गति से पढ़ने का अभ्यास सस्वर पठन के द्वारा ही कराया जाता है। इसमें साहित्यिक विद्या पढ़ाने का एकांकी सबसे उपयुक्त तरीका है। एकांकी का साधारण अर्थ है। एक अंक वाला नाटक लेकिन नाटक से एकांकी की कला और शैली भिन्न होती है। दोनों में अनुकरण तत्व प्रमुखता होती है।

2. Ans. D.
व्याकरण की शिक्षा स्वतन्त्र रूप से न देकर साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वानों की रचनाएँ पढ़ाई जाएँ। यह समवाय विधि के अंतर्गत आता है। इस विधि के प्रतिपादकों का मत है कि व्याकरण की शिक्षा स्वतन्त्र रूप से न देकर साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वानों की रचनाएँ पढाई जाएँ। इसके अन्तर्गत मौखिक एवं लिखित कार्य कराते समय, गद्य की पुस्तक पढ़ते समय, रचना कार्य करते समय प्रासंगिक रूप से व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराया जाता है।

3. Ans. B.
भाषा परिवर्तनशील है। विकासशील है। व्याकरण उसके इस विकास पर नियन्त्रण का कार्य करता है। व्याकरण भाषा को अव्यवस्थित होने से बचाता है। व्याकरण अनुकरण से सीखी जाती है परन्तु भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए हमें उसके सर्वमान्य रूप को सीखना होता है। अतःशर्मिला का यह भाषा प्रयोग मुख्यतःनियमों का अति सामान्यीकरण की ओर संकेत करता।

4. Ans. C.
स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को विकसित करना भाषा शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण उद्धेश्य है । भाषा शिक्षण के बहुत महत्त्वपूर्ण उद्धेश्य है। उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य शिक्षार्थी को अपने भाषिक व्यवहार के प्रति अधिक से अधिक सजग करना है ।

5. Ans. D.
दृश्य-श्रव्य साधन इन उपकरणों का सम्बन्ध छात्रों की आँखों एवं कानों से है। इसमें दृश्येन्द्रिय एवं श्रवणेन्द्रिय दोनों का एक साथ प्रयोग करके छात्र ज्ञान प्राप्त करते हैं। उदाहरणस्वरूप टेलीविजन, चल-चित्र, नाटक आदि।

6. Ans. C.
दिए गए विकल्पों के अनुसार भाषा-शिक्षा में परीक्षाएँ बिन्दु सबसे कम महत्त्वपूर्ण है। भाषा-शिक्षा सबसे व्यापक मूल्यांकन है। इसे केवल परीक्षाओं के माध्यम से मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। परीक्षाएँ के अलावा और भी व्यापक परिवेश होता है जिसके माध्यम से भाषा-शिक्षा का मूल्यांकन किया जा सकता है। भाषा-शिक्षा में भाषिक परिवेश,पाठ्य सामग्री, भाषायी अभ्यास सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है

7. Ans. A.
सतत् और व्यापक मूल्यांकन की शुरूआत ने मूल्यांकन व्यवस्था को बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व को ज्यादा प्रदर्शित करने वाला बनाया है। यह मूल्यांकन के एक भाग के रूप में सह-शैक्षिक पहलुओं पर बल देते हुए यह अधिगमकर्ता के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायक सिद्ध हो रही है। यह छात्रों के पास अब उनकी रूचियों, आदतों तथा व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए अधिक समय उपलब्ध है।

8. Ans. C.
प्रगति-पत्र (रिपोर्ट कार्ड) तैयार करने से शिक्षक को अपने प्रत्येक विद्यार्थी के बारे में यह सोचने का मौका मिलता है। कि वह उसने सत्र के दौरान क्या सीखा और किस क्षेत्र में उसको ज्यादा मेहनत करने की जरूरत है । तथा शिक्षक अगले सत्र के लिए शिक्षण की रणनीति तैयार कर सकता है। जैसे किस विषय-वस्तु पर अधिक ध्यान देना है। कौन-सी सही शिक्षण विधि अपनानी है।

9. Ans. A.
समावेशी कक्षा में भाषा-शिक्षण की समस्या अधिक उत्पन्न होती है। इसमें समावेशी का अर्थ विभिन्न अक्षमताओं वाले बच्चों को नियमित कक्षाओं में अन्य बिना किसी अक्षमताओं वाले बच्चों के साथ शामिल करने से लगाया जाता रहा है। इस कारण से भाषा-शिक्षण में समस्या उत्पन्न होती है।

10. Ans. D.
कलिका हिंदी भाषा में बोलते समय कई बार अटकती है तो शिक्षक को धैर्य रखते हुए उसे सहज अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित करेंगे। मानव प्रधानतः अपनी अनुभूतियों तथा मनोवेगों की अभिव्यक्ति उच्चरित अथवा मौखिक भाषा में करता है। इसलिए अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

11. Ans. B.

उपचारात्मक कार्यों के द्वारा छात्रों की कई कमियों को सुधारा जा सकता है। जिससे छात्रों की हिंदी शिक्षण में रूचि विकसित होगी और छात्र हिंदी भाषा के मानक स्वरूप को भी बनाए रखने में अपना योगदान दे सकेंगे। हिन्दी भाषा शिक्षण में उपचारात्मक शिक्षण की विधि निम्न है ।

1) अतिरिक्त कक्षाएँ

2) गोष्ठियाँ

3) विशिष्ट अभ्यास

4) निदान के उपरान्त अशुद्धियां का सामूहिक निराकरण

5) अशुद्धियों का व्यक्तिगत निवारण।

6) व्यक्तिगत भेदों के आधार पर व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से कठिनाइयों का निवारण।

12. Ans. D.

उपचारात्मक शिक्षण की सफलता मुख्यतः समस्याओं के करणों की सही पहचान पर निर्भर करती है। उपचारी शिक्षण के अनेक रूप हो सकते हैं। बालकों की कठिनाइयों का सामूहिक रूप से निवारण और उचित अभ्यास, वैयक्तिक भेदों, के आधार पर व्यक्तिगत बालक की अशुद्धियों का निवारण, उपचार ग्रहों अथवा भाषा प्रयोगशालाओं में बालकों के उच्चारण एवं भाषा संबंधी प्रशिक्षण और अभ्यास।

13. Ans. C.

भाषा का वह शैक्षिक उद्धेश्य जिसे शिक्षक कक्षा में ही प्राप्त कर लेता है। विशिष्ट उद्धेश्य कहलाता है। भाषा की महत्ता जानने से उनके शिक्षण की आवश्यकता का ज्ञान हो जाता है, इसके साथ ही शिक्षक को उन सभी उद्धेश्यों से पूर्ण परिचित हो जाना चाहिए, जिनके लिए वह भाषा पढ़ाना चाहता है।

14. Ans. D.

पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत के अनुसार पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों में सह-सम्बन्ध होना चाहिए ताकि शिक्षक हर विषयों को एक-दूसरे से लिंक करके अध्ययन को पूर्ण कर सके। इसमें अवकाश का सदुपयोग तथा अग्रदर्शी होना चाहिए।

15. Ans. D.

उपचारात्मक शिक्षण आवश्यक है। मन्द-बुद्धि बच्चों के लिए, पिछड़े बच्चों के लिए, प्रतिभाशाली बच्चों के लिए सभी के लिए आवश्यक है। उपचार विधि की यह विशेषता होनी चाहिए कि उससे विद्यार्थी को अपनी सफलता के सम्बन्ध में शीघ्र परिणाम मिल सकें तथा प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी को अधिक-से-अधिक सक्रिय रखा जाए।

16. Ans. C.

पाठ्य-पुस्तक में ज्ञान, अनुभव, भावनाओं, विचारों प्रवृत्तियों तथा मूल्यों के संचय का साधन है। पाठ्य पुस्तकों में इन सभी को शामिल करने में ज्ञान तथा अनुभवों में निरन्तर वृद्धि होती है। छात्र पाठ्य पुस्तक के माध्यम से अपने भावी जीवन को जीने की कला सीखाता है।

17. Ans. D.

मौखिक भाषा ही अभिव्यक्ति का सहज व सरलतम माध्यम है। भाषा की शिक्षा मौखिक भाषा से प्रारम्भ होती है। मौखिक भाषा के प्रयोग में कुशल व्यक्ति, अपनी वाणी से जादू जगा सकता है। मौखिक अभिव्यक्ति मेंअनुकरण और अभ्यास के अवसर बराबर मिलते रहते हैं। मौखिक अभिव्यक्ति में स्वाभिकता, स्पष्टता, शुद्धता बोधगम्यता, शिष्टता, मधुरता, प्रवाहमयता, अवसरानुकूल श्रोताओं के अनुकूल भाषा।

18. Ans. D.

लिखित भाषा को बिना आवाज किए मन ही मन में शान्तिपूर्वक पढ़कर अर्थग्रहण करने की प्रक्रिया को मौन पठन कहा जाता है। इससे आँखें पठन सामग्री को जल्दी-जल्दी पढ़ती हैं और मस्तिष्क उस सामग्री के अर्थ को ग्रहण करता है।

19. Ans. A.

अनुदेशन की अवस्था का सही पूर्व व्यवहार-पारस्परिक क्रिया- उत्तर व्यावहारिक अनुदेशन है। अनुदेशन सूचना ज्ञान (परामर्श) देना होता है, जो शिक्षक द्वारा सम्पन्न होने वाली प्रकिया है।

अनुदेशन की अवस्थायें-

(i) पूर्व व्यवहार (तैयारी या पूर्व क्रिया), (ii) पारस्परिक क्रिया (प्रोग्राम का लिखना या अंत:

क्रिया), (iii) उत्तर व्यावहारिक अनुदेशन (जाँच एवं मूल्याङ्कन या उत्तर क्रिया)

20. Ans. A.
एक निश्चित पाठ्यक्रम के अधययन के प्रमुख साधन के रुप में एक निश्चित शैक्षिक स्तर प्रयुक्त करने के लिए एक निश्चित विषय पर व्यवस्थित ढंग से लिखी हुई पुस्तक पाठ्य-पुस्तक कहलाती है। पाठ्य-पुस्तकें अनुभवजन्य ज्ञान की इस अपार धरोहर को सुरक्षित रखती हैं। अतः भाषा-शिक्षण में पाठ्य-पुस्तक को परम्परागत प्रकाशित सामग्री के रुप में सहायक समझा जाना चाहिए।

***

gradeup

CTET 2018 Exam Preparation Kit

CTET 2018 Online Course by EduTap

Features

1. Complete Syllabus Covered through Interactive Videos
2. Previous Years Questions Discussion
3. Q&A Dashboard to Clear your Doubts
4. Practice Assignments

Online Test Series by gradeup

Features

- Mock Tests with Detailed Solution
- Get All India Rank and Percentile
- Available in Hindi & English

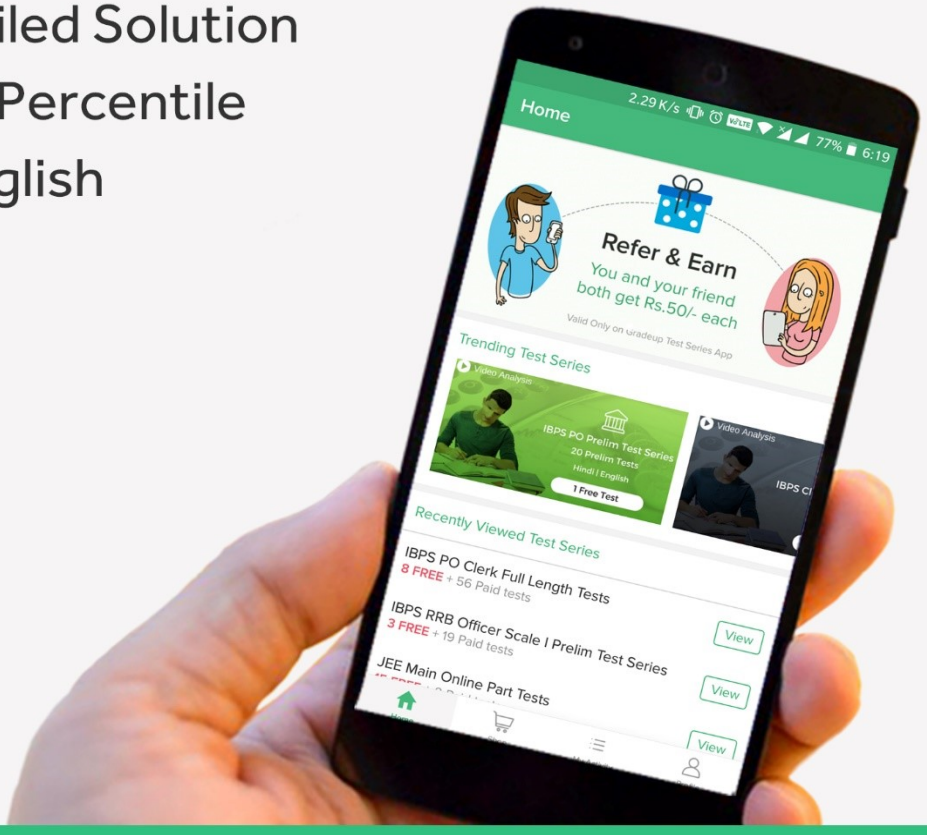

ANDROID APP ON Google play

FOR MORE DETAILS
visit: courses.gradeup.co / **email us at** help@gradeup.co
You can also call us on **9650053463**